International Journal of Applied Research 2022; 8(9): 44-50

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(9): 44-50
www.allresearchjournal.com
Received: 06-07-2022
Accepted: 10-08-2022

सन्मति जैन
सहायक प्रोफेसर, जापानी भाषा, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author:
सन्मति जैन
सहायक प्रोफेसर, जापानी भाषा, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

हिंदी एवं जापानी में अकर्मक-सकर्मक क्रियाएँ

सन्मति जैन

सारांश
विश्व के लगभग सभी भाषाविदों ने किसी भी भाषा के ज्ञान के लिये उस भाषा की क्रियाओं के ज्ञान को अधिक महत्व दिया है। यही कारण है कि विभिन्न भाषाविदों ने क्रियाओं के ज्ञान के लिए भिन्न-भिन्न उपाय खोजे हैं, जिनमें से क्रियाओं का वर्गीकरण कर उन पर शोध करना एक महत्वपूर्ण उपाय है। फलस्वरूप क्रियाओं को कभी उनकी संरचना के आधार पर, कभी कर्म के आधार पर, तो कभी-कभी क्रिया की नियमितता-अनियमितता के आधार पर रूपात्मक दृष्टि से वर्गीकृत कर विचार किया जाता रहा है। प्रस्तुत पत्र में हिंदी एवं जापानी की अकर्मक एवं सकर्मक क्रियाओं को समझने का प्रयास किया गया है। जिसमें प्रथमत: हिंदी भाषा में अकर्मक एवं सकर्मक क्रियाओं की क्या अवधारणा है। तथा अकर्मक से सकर्मक एवं सकर्मक से अकर्मक क्रिया बनाने के उपाय अथवा संभाव्य नियमों आदि पक्षों पर विचार किया गया है। तदोपरांत जापानी में अकर्मक एवं सकर्मक क्रियाओं की क्या अवधारणा है। तथा अकर्मक से सकर्मक एवं सकर्मक से अकर्मक क्रिया बनाने के उपाय अथवा संभाव्य नियमों आदि पक्षों पर भी विचार किया गया है। और अंत में दोनों ही भाषाओं (हिंदी एवं जापानी) की अकर्मक-सकर्मक क्रियाओं के विभिन्न पक्षों पर विचार कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

कूट-शब्द: क्रिया, हिंदी क्रिया, जापानी क्रिया, अकर्मक क्रिया, सकर्मक क्रिया, हिंदी अकर्मक क्रिया, हिंदी सकर्मक क्रिया, जापानी अकर्मक क्रिया, जापानी सकर्मक क्रिया, सकर्मकीकरण, अकर्मकीकरण

1. प्रस्तावना

जब किसी शब्द या शब्दों के समूह से किसी कार्य के होने या करने का बोध होता है, तो उसे क्रिया कहते हैं। कोई भी क्रिया, मूल में अकर्मक होती है कि सकर्मक होती है, इस तथ्य पर विद्वानों में काफी मत-भेद हैं। हालाँकि, अधिकांश विद्वानों का मानना है, कि कुछ क्रियाएँ मूलत: अकर्मक होती हैं और कुछ क्रियाएँ मूलत: सकर्मक होती हैं। और कुछ क्रियाएँ ऐसी भी हैं जो प्रयोग की स्थिति के अनुसार मूलत: अकर्मक एवं सकर्मक दोनों ही रूपों में प्रयोग की जा सकती हैं। यहाँ पर कुछ विद्वानों का यह मत भी ध्यातव्य है, कि अकर्मक क्रियाओं से व्युत्पन्न सकर्मक क्रियाएँ प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाओं के रूप में भी प्रयुक्त होती हैं।

2 हिंदी की अकर्मक-सकर्मक क्रिया: हिंदी क्रियाओं को कर्म के आधार पर अकर्मक एवं सकर्मक (एक-कर्मक एवं द्वि-कर्मक) में विभक्त किया गया है।

2.1 अकर्मक क्रिया: जिस धातु (क्रिया) से सूचित होने वाला व्यापार और उसका फल कर्ता पर ही पड़े, उसे अकर्मक धातु कहते हैं।[1] अर्थात अकर्मक क्रियाओं से तात्पर्य उन क्रियाओं से है, जिनमें कर्म की अपेक्षा नहीं होती है और क्रिया से होने वाले व्यापार का प्रभाव अथवा फल सीधा कर्ता पर ही पड़ता है। उन्हें अकर्मक क्रियाएँ कहते हैं। आसान शब्दों में देखें तो जब किसी क्रिया के पूर्व में 'क्या' अथवा 'किसको' शब्द का प्रयोग कर प्रश्न किया जाये और कोई सार्थक उत्तर नहीं आये तो ऐसी क्रियाएँ प्राय: 'अकर्मक' होती हैं।

उदाहरण: मैं सोता हूँ।
(यहाँ पर 'सोता हूँ' क्रिया के साथ 'क्या सोता हूँ' ऐसा प्रश्न करने पर न तो कोई सार्थक प्रश्न ही बनता है और न ही कोई सार्थक उत्तर ही प्राप्त होता है। अत: यह अकर्मक क्रिया है।)

[1] गुरु, कामता प्रसाद (2013), हिंदी व्याकरण, पेज-100

2.2 सकर्मक क्रिया: जिस धातु (क्रिया) से सूचित होने वाले व्यापार का फल कर्ता से निकलकर किसी दूसरी वस्तु पर पड़ता है, उसे सकर्मक धातु कहते हैं।[2] सकर्मक क्रियाओं से तात्पर्य उन क्रियाओं से है, जिनमें कर्म होता है अथवा कर्म के होने की संभावना होती है। तथा क्रिया से होने वाले व्यापार का प्रभाव अथवा फल कर्ता पर न होकर किसी अन्य वस्तु अथवा पदार्थ पर पड़ता है। उन्हें सकर्मक क्रियाएँ कहते हैं। आसान शब्दों में देखें तो जब किसी क्रिया के पूर्व में 'क्या' अथवा 'किसको' शब्द का प्रयोग कर प्रश्न किया जाये और उत्तर में कोई वस्तु या व्यक्ति का नाम आये तो ऐसी क्रियाएँ प्राय: 'सकर्मक' होती हैं। यहाँ पर ध्यातव्य है कि संज्ञा या ऐसे सभी पद जो संज्ञा की तरह प्रयुक्त होते हैं, चाहे वे सर्वनाम हों, विशेषण हों, कृदंत आदि हों, वे सभी कर्म हो सकते हैं। सकर्मक क्रियाओं के दो भेद हैं:-

क) एक-कर्मक क्रिया: एक-कर्मक क्रियाओं से तात्पर्य उन सकर्मक क्रियाओं से है, जिनमें केवल एक ही कर्म होता है अथवा एक ही कर्म होने की संभावना होती है। उन्हें एक-कर्मक क्रियाएँ कहते हैं। आसान शब्दों में देखें तो जब किसी क्रिया के पूर्व में 'क्या' अथवा 'किसको' शब्द का प्रयोग कर प्रश्न किया जाये और उत्तर में किसी एक का जबाब आये तो ऐसी क्रियाएँ प्राय: 'एक-कर्मक' होती हैं।

उदाहरण: बच्चा दूध पीता है।
(यहाँ पर 'पीता है' क्रिया के साथ 'क्या पीता है' ऐसा प्रश्न करने पर 'दूध' शब्द एक सार्थक उत्तर के रूप में प्राप्त होता है। अत: यह सकर्मक क्रिया है। चूँकि, यहाँ पर क्रिया के साथ केवल एक ही कर्म का प्रयोग हुआ है। अत: यह एक-कर्मक क्रिया है।)

ख) द्वि-कर्मक क्रिया: द्विकर्मक क्रियाओं से तात्पर्य उन सकर्मक क्रियाओं से है, जिनमें दो कर्म होते हैं अथवा जिनमें दो कर्मों के होने की संभावना होती है। इनमें से एक कर्म 'प्रधान' होता है और दूसरा कर्म 'गौण' होता है। यहाँ पर ध्यातव्य है कि प्राय: प्रधान कर्म कोई 'वस्तु' अथवा 'अप्राणिवाचक' होता है और गौण कर्म 'प्राणिवाचक' होता है। आसान शब्दों में देखें तो जब किसी क्रिया के पूर्व में 'क्या' और 'किसको' शब्द का प्रयोग कर प्रश्न किया जाये और उत्तर में दोनों का जबाब आये तो ऐसी क्रियाएँ प्राय: 'द्वि-कर्मक' होती हैं।

उदाहरण: बच्चे ने माँ को पैसे दिये।
(यहाँ पर 'दिये' क्रिया के साथ 'क्या दिये' ऐसा प्रश्न करने पर 'पैसे' शब्द एक सार्थक उत्तर के रूप में प्राप्त होता है। तथा 'किसको दिये' ऐसा प्रश्न करने पर 'माँ को' शब्द एक सार्थक उत्तर के रूप में प्राप्त होता है। अत: यह सकर्मक क्रिया है। चूँकि, यहाँ पर क्रिया के साथ दो कर्मों का प्रयोग हुआ है। अत: यह द्वि-कर्मक क्रिया है। यहाँ पर 'माँ' गौण कर्म है और 'पैसे' प्रधान कर्म है।)

3. हिंदी में अकर्मक से सकर्मक एवं सकर्मक से अकर्मक बनाने के संभाव्य नियम: पूर्वोक्तानुसार हिंदी में कुछ क्रियाएँ मूलत: अकर्मक होती हैं, तो कुछ क्रियाएँ मूलत: सकर्मक होती हैं। और कुछ क्रियाएँ ऐसी भी हैं, जो प्रयोग की स्थिति के अनुसार मूलत: अकर्मक एवं सकर्मक दोनों ही रूपों में प्रयोग की जा सकती हैं। ध्यातव्य है कि कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं, जिन्हें विभिन्न उपायों के माध्यम से अकर्मक से सकर्मक एवं सकर्मक से अकर्मक में परिवर्तित किया जा सकता है। परंतु, कुछ क्रियाएँ ऐसी भी हैं, जो सदैव अकर्मक अथवा सकर्मक रूप में ही रहती हैं, इन्हें अन्य रूप में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। हालाँकि, उपर्युक्त विषय में विद्वानों में काफी मतभेद है। ध्यातव्य रहे कि अकर्मक क्रियाओं के साथ कभी भी कारक चिह्नों का प्रयोग नहीं होता है। कारक चिह्न केवल सकर्मक क्रियाओं के साथ ही आते हैं।

3.1 हिंदी में अकर्मक से सकर्मक बनाने के संभाव्य नियम: हिंदी की अकर्मक-सकर्मक क्रियाओं को समझने के उद्देश्य से विद्वानों ने विभिन्न परिवर्तनों के माध्यम से अकर्मक से सकर्मक बनाने के कुछ संभाव्य उपायों अथवा नियमों के बारे में विचार किया है। विषय प्रवेश की दृष्टि से उनमें से कुछ के बारे में यहाँ पर चर्चा की जा रही है।

सारणी 1: अकर्मक क्रियाओं के प्रथम ह्रस्व स्वर को दीर्घ स्वर में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया
ढलन, मरना	क्रिया के प्रथम ह्रस्व स्वर 'अ' को दीर्घ 'आ' में परिवर्तित करके	ढालना, मारना

सारणी 2: अकर्मक क्रियाओं के द्वितीय ह्रस्व स्वर को दीर्घ स्वर में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया
उखड़ना, बिगड़ना	क्रिया के द्वितीय ह्रस्व स्वर 'अ' को दीर्घ 'आ' में परिवर्तित करके	उखाड़ना, बिगाड़ना

सारणी 3: अकर्मक क्रियाओं के प्रथम वर्ण के 'इ' स्वर को 'ए' में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया
घिरना, छिदना	क्रिया के प्रथम वर्ण के 'इ' स्वर को 'ए' में परिवर्तित करके	घेरना, छेदना

सारणी 4: अकर्मक क्रियाओं के प्रथम वर्ण के 'उ' अथवा 'ऊ' स्वर को 'ओ' में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया
खुलना, मुड़ना	क्रिया के प्रथम वर्ण के 'उ' अथवा 'ऊ' स्वर को 'ओ' में परिवर्तित करके	खोलना, मोड़ना

सारणी 5: अकर्मक क्रियाओं के प्रथम वर्ण के 'उ' अथवा 'ऊ' स्वर को 'ओ' तथा द्वितीय वर्ण 'ट' को 'ड़' में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया
छूटना, टूटना	क्रिया के प्रथम वर्ण के 'उ'/'ऊ' स्वर को 'ओ' तथा द्वितीय वर्ण 'ट' को 'ड़' में परिवर्तित करके	छोड़ना, तोड़ना

सारणी 6: कुछ अन्य अनियमित परिवर्तनों के आधार पर भी अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया
फटना	अनियमित परिवर्तनों के आधार पर	फाड़ना
बिकना	अनियमित परिवर्तनों के आधार पर	बेचना

3.2 हिंदी में सकर्मक से अकर्मक बनाने के संभाव्य नियम: हिंदी की सकर्मक-अकर्मक क्रियाओं को समझने के उद्देश्य से विद्वानों ने विभिन्न परिवर्तनों के माध्यम से सकर्मक से अकर्मक बनाने के कुछ संभाव्य उपायों अथवा नियमों के बारे में विचार किया है। विषय प्रवेश की दृष्टि से उनमें से कुछ के बारे में यहाँ पर चर्चा की जा रही है।

[2] गुरु, कामता प्रसाद (2013), हिंदी व्याकरण, पेज-99

सारणी 7: सकर्मक क्रियाओं के प्रथम 'ए' स्वर को 'इ' स्वर में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया
देखना	क्रिया के प्रथम 'ए' स्वर को 'इ' स्वर में परिवर्तित करके	दिखना

सारणी 8: सकर्मक क्रियाओं के प्रथम 'ओ' स्वर को 'उ' स्वर में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया
रोकना, जोतना	क्रिया के प्रथम 'ओ' स्वर को 'उ' स्वर में परिवर्तित करके	रुकना, जुतना

सारणी 9: सकर्मक क्रियाओं के प्रथम 'आ' स्वर को 'अ' स्वर में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया
बाँधना, चलाना	क्रिया के प्रथम 'आ' स्वर को 'अ' स्वर में परिवर्तित करके	बँधना, चलना

सारणी 10: सकर्मक क्रियाओं के प्रथम वर्ण के 'ओ' स्वर को 'ऊ' तथा द्वितीय वर्ण के 'ड़' को 'ट' में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया
फोड़ना	क्रिया के प्रथम वर्ण के 'उ'/'ऊ' स्वर को 'ओ' तथा द्वितीय वर्ण 'ट' को 'ड़' में परिवर्तित करके	फूटना

सारणी 11: कुछ अन्य अनियमित परिवर्तनों के आधार पर भी सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया
सीना	अनियमित परिवर्तनों के आधार पर	सिलना

3.3 हिंदी की कुछ क्रियाएँ जिनके प्रयोग की दृष्टि से दोनों ही रूप (अकर्मक एवं सकर्मक) संभाव्य हैं: हिंदी में कुछ ऐसी भी क्रियाएँ हैं जिनके अकर्मक एवं सकर्मक दोनों ही रुपों में समान प्रयोग देखने को मिलता है। उनमें से कुछ के बारे में यहाँ पर चर्चा की जा रही है। उदाहरण:

सारणी 12: हिंदी की कुछ क्रियाएँ जिनके प्रयोग की दृष्टि से दोनों ही रूप (अकर्मक एवं सकर्मक) संभाव्य हैं

अकर्मक क्रिया के रूप में प्रयोग	सकर्मक क्रिया के रूप में प्रयोग
भरना (घड़ा भरता है।)	भरना (नौकर घड़ा भरता है।)
पढ़ना (वह कक्षा सात में पढ़ता है।)	पढ़ना (वह पुस्तक पढ़ता है।)

सारणी 13: हिंदी में कुछ क्रियाएँ हमेशा अकर्मक ही रहती हैं इनके सकर्मक रूप नहीं बनते हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	सकर्मक रूप
आना	-
जाना	-

सारणी 14: हिंदी में कुछ क्रियाएँ हमेशा सकर्मक ही रहती हैं इनके अकर्मक रूप नहीं बनते हैं। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	अकर्मक रूप
कोसना	-
चुराना	-

उपरोक्त अकर्मक-सकर्मक की प्रक्रियाओं में से निम्नलिखित बातें सामने आती हैं:

क) कुछ अकर्मक क्रियाओं के प्रथम अथवा द्वितीय ह्रस्व स्वर 'अ' को दीर्घ 'आ' में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ख) कुछ अकर्मक क्रियाओं के प्रथम स्वर 'इ' को 'ए' में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ग) कुछ अकर्मक क्रियाओं के प्रथम स्वर 'उ' अथवा 'ऊ' को 'ओ' में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

घ) कुछ अकर्मक क्रियाओं के प्रथम वर्ण के 'उ' अथवा 'ऊ' स्वर को 'ओ' तथा द्वितीय वर्ण 'ट' को 'ड़' में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ङ) कुछ सकर्मक क्रियाओं के प्रथम दीर्घ 'आ' स्वर को ह्रस्व 'अ' में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

च) कुछ सकर्मक क्रियाओं के प्रथम स्वर 'ए' को 'इ' में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

छ) कुछ सकर्मक क्रियाओं के प्रथम स्वर 'ओ' को 'उ' में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ज) कुछ सकर्मक क्रियाओं के प्रथम वर्ण के 'ओ' स्वर को 'उ' तथा द्वितीय वर्ण 'ड़' को 'ट' में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

झ) उपर्युक्त के अतिरिक्त कुछ क्रियाएँ अनियमित परिवर्तनों के आधार पर भी अकर्मक से सकर्मक तथा सकर्मक से अकर्मक रूप में व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ञ) कुछ क्रियाएँ ऐसी भी हैं जिनके अकर्मक एवं सकर्मक दोनों ही रुपों में समान प्रयोग देखने को मिलते हैं।

ट) कुछ अकर्मक क्रियाएँ सदैव अकर्मक रूप में ही प्रयुक्त होती हैं इनके सकर्मक रूप नहीं बनते तथा कुछ सकर्मक क्रियाएँ सदैव सकर्मक रूप में ही प्रयुक्त होती हैं इनके अकर्मक रूप नहीं बनते हैं।

4. जापानी की अकर्मक-सकर्मक क्रिया: जापानी में भी क्रियाओं को विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया गया है, उनमें से एक वर्गीकरण कर्म के आधार पर भी है। हिंदी की भाँति जापानी क्रियाओं को भी कर्म के आधार पर अकर्मक एवं सकर्मक इन दो रूपों में विभक्त किया जा सकता है। जापानी में अमुक क्रिया सकर्मक है, कि अकर्मक है, इसको जानने के लिए वाक्य में प्रयुक्त कर्ता अथवा कर्म की आवश्यकता तो होती ही है। साथ ही क्रिया से पूर्व संज्ञा शब्द (कर्ता अथवा कर्म आदि) में लगने वाला पार्टिकल (कारक चिह्न) भी इस बात की सूचना देता है, कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया सकर्मक है अथवा अकर्मक है। ध्यातव्य रहे कि जापानी में सामान्य स्थितियों में कर्ता का लोप कर दिया जाता है। कर्ता को तभी दिखाया जाना उपयुक्त समझा जाता है जब उसे दिखाया जाना अनिवार्य हो अथवा जब उसके दिखाये बिना वाक्य अपूर्ण लगे।

4.1 जापानी की अकर्मक क्रिया: जापानी की अकर्मक क्रियाओं में किसी वस्तु अथवा व्यक्ति रूप संज्ञा के साथ 'गा/वा' पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग किया जाता है तथा वाक्य के अंत में अकर्मक क्रिया का प्रयोग किया जाता है। अर्थात जापानी अकर्मक क्रियाओं में कर्ता के रूप में प्रयुक्त संज्ञा शब्द के साथ 'गा/वा' पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग होता है, इसमें क्रिया के साथ कभी भी 'डायरेक्ट ऑब्जेक्ट' का प्रयोग नहीं होता है। 'क्या' शब्द से प्रश्न करने पर इसमें कोई जबाव नहीं मिलता है। जिसका सूत्र (वस्तु/व्यक्ति+गा+अकर्मक क्रिया) माना जा सकता है। उदाहरण:

जापानी अकर्मक क्रिया का वाक्य में प्रयोग	जापानी वाक्य का देवनागरी में उच्चारण	जापानी वाक्य का हिंदी अनुवाद
時計が壊れました。	तोकेइ गा कोवारेमाशिता।	घड़ी टूट गयी।

(यहाँ पर अकर्मक क्रिया "कोवारेमाशिता" (टूट गयी) में "तोकेइ" (घड़ी) के साथ "गा" पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग किया गया है।)

नोट: जापानी सकर्मक क्रियाओं में 'डायरेक्ट ऑब्जेक्ट' के साथ 'ओ' पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग किया जाता है। जबकि अकर्मक क्रियाओं के साथ 'डायरेक्ट ऑब्जेक्ट' का प्रयोग न होने के कारण 'ओ' पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग नहीं होता है। ध्यातव्य रहे कि जापानी अकर्मक क्रियाओं के साथ प्रयुक्त कोई शब्द अगर किसी स्थान/लोकेशन आदि को इंगित करता है, तो इसके साथ भी 'ओ' पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग किया जा सकता है। परंतु, यह 'डायरेक्ट ऑब्जेक्ट' के रूप में प्रयुक्त 'ओ' पार्टिकल (कारक चिह्न) नहीं होगा। उदाहरण:

तोमोदाचि (गा)	इए (ओ)	देता।
友達が	家を	出た。
मित्र ने	घर	छोड़ा।
कर्ता	स्थान/लोकेशन	क्रिया (अकर्मक क्रिया)

(यहाँ पर अकर्मक क्रिया "देता" (छोड़ा) में "तोमोदाचि" (मित्र) के साथ "गा" पार्टिकल (कारक चिह्न) एवं 'इए' (घर) के साथ 'ओ' पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग किया गया है। ध्यान रहे कि यहाँ पर 'इए' (घर) के साथ प्रयुक्त 'ओ' पार्टिकल (कारक चिह्न) 'डायरेक्ट ऑब्जेक्ट' का द्योतक नहीं है।)

4.2 जापानी की सकर्मक क्रिया: जापानी सकर्मक क्रियाओं में कर्ता के साथ 'गा' अथवा 'वा' पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग किया जाता है और कर्म के साथ 'ओ' पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग किया जाता है। तथा वाक्य के अंत में सकर्मक क्रिया का प्रयोग किया जाता है। हालाँकि, अगर अत्यावश्यक न हो तो प्राय: कर्ता का लोप कर दिया जाता है। जिसका सूत्र (कर्ता+गा/वा+कर्म+ओ+सकर्मक क्रिया) माना जा सकता है। उदाहरण:

जापानी अकर्मक क्रिया का वाक्य में प्रयोग	जापानी वाक्य का देवनागरी में उच्चारण	जापानी वाक्य का हिंदी अनुवाद
私が時計を壊しました。	वाताशि गा तोकेइ ओ कोवाशिमाशिता।	मैंने घड़ी तोड़ दी।

(यहाँ पर सकर्मक क्रिया "कोवाशिमाशिता" (तोड़ दी) में "तोकेइ" (घड़ी) के साथ "ओ" पार्टिकल (कारक चिह्न) एवं "वाताशि" (मैं) के साथ "गा" पार्टिकल (कारक चिह्न) का प्रयोग किया गया है।)

5. जापानी में अकर्मक से सकर्मक एवं सकर्मक से अकर्मक बनाने के संभाव्य नियम: हिंदी की भाँति जापानी में भी कुछ क्रियाएँ मूलत: अकर्मक होती हैं, तो कुछ क्रियाएँ मूलत: सकर्मक होती हैं। और कुछ क्रियाएँ ऐसी भी हैं, जो प्रयोग की स्थिति के अनुसार मूलत: अकर्मक एवं सकर्मक दोनों ही रूपों में प्रयोग की जा सकती हैं। ध्यातव्य है कि कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं, जिन्हें विभिन्न उपायों के माध्यम से अकर्मक से सकर्मक एवं सकर्मक से अकर्मक में परिवर्तित किया जा सकता है। परंतु, कुछ क्रियाएँ ऐसी भी हैं, जो सदैव अकर्मक अथवा सकर्मक रूप में ही रहती हैं, इन्हें अन्य रूप में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। हालाँकि, उपर्युक्त विषय में विद्वानों में काफी मतभेद है। ध्यान रहे! जब किसी जापानी क्रिया के अकर्मक एवं सकर्मक दोनों ही रूप बनते हैं, तो अकर्मक रूप का प्रयोग स्वचलित क्रियाओं अथवा प्राकृतिक घटनाओं से संबंधित कार्यों को दर्शाने के लिये किया जाता है, जबकि सकर्मक रूप का प्रयोग साभिप्राय अथवा इरादतन क्रियाओं अथवा कार्यों को दर्शाने के लिये किया जाता है।

5.1 जापानी में अकर्मक से सकर्मक क्रिया बनाने के संभाव्य नियम– जापानी की अकर्मक-सकर्मक क्रियाओं को समझने के उद्देश्य से विद्वानों ने विभिन्न परिवर्तनों के माध्यम से अकर्मक से सकर्मक बनाने के कुछ संभाव्य उपायों अथवा नियमों के बारे में विचार किया है। उनमें से कुछ के बारे में यहाँ पर चर्चा की जा रही है। देखें:-

सारणी 15: जापानी में "आरु" से अंत होने वाली क्रियाएँ प्राय: अकर्मक होती हैं, इन क्रियाओं का सकर्मक रूप बनाने के लिए इनके अंत के "आरु" को "एरु" में परिवर्तित कर दिया जाता है। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
上がる	आ+गारु	मूल क्रिया के अंत के "आरु" को "एरु" में परिवर्तित करके	上げる	आ+गेरु
集まる	आत्सु+मारु	मूल क्रिया के अंत के "आरु" को "एरु" में परिवर्तित करके	集める	आत्सु+मेरु

सारणी 16: जापानी में "रेरु" से अंत होने वाली कुछ क्रियाएँ प्राय: अकर्मक होती हैं, इन क्रियाओं का सकर्मक रूप बनाने के लिए इनके अंत के "रेरु" को "सु" में परिवर्तित कर दिया जाता है। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
壊れる	कोवा+रेरु	मूल क्रिया के अंत के "रेरु" को "सु" में परिवर्तित करके	壊す	कोवा+सु
汚れる	योगो+रेरु	मूल क्रिया के अंत के "रेरु" को "सु" में परिवर्तित करके	汚す	योगो+सु

सारणी 17: जापानी में "रेरु" से अंत होने वाली कुछ क्रियाएँ प्राय: अकर्मक होती हैं, इन क्रियाओं का सकर्मक रूप बनाने के लिए इनके अंत के "रेरु" को "रु" में परिवर्तित कर दिया जाता है। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
売れる	उ+रेरु	मूल क्रिया के अंत के "रेरु" को "रु" में परिवर्तित करके	売る	उ+रु
割れる	वा+रेरु	मूल क्रिया के अंत के "रेरु" को "रु" में परिवर्तित करके	割る	वा+रु

सारणी 18: जापानी में "आरेरु" से अंत होने वाली क्रियाएँ प्राय: अकर्मक होती हैं इन क्रियाओं का सकर्मक रूप बनाने के लिए इनके अंत के "आरेरु" को "उ" में परिवर्तित कर दिया जाता है। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
生まれる	उ+मारेरु	मूल क्रिया के अंत के "आरेरु" को "उ" में परिवर्तित करके	生む	उ+मु

सारणी 19: कुछ अन्य अनियमित परिवर्तनों के आधार पर भी अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। इनके लिये अलग से कोई विशेष नियम नहीं हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
消える	कि+एरु	अनियमित परिवर्तनों के आधार पर	消す	के+सु
出る	दे+रु	अनियमित परिवर्तनों के आधार पर	出す	दा+सु
なる	नारु	अनियमित परिवर्तनों के आधार पर	する	सुरु

5.2 जापानी में सकर्मक से अकर्मक क्रिया बनाने के संभाव्य नियम– जापानी की सकर्मक-अकर्मक क्रियाओं को समझने के उद्देश्य से विद्वानों ने विभिन्न परिवर्तनों के माध्यम से सकर्मक से अकर्मक बनाने के कुछ संभाव्य उपायों अथवा नियमों के बारे में विचार किया है। उनमें से कुछ के बारे में यहाँ पर चर्चा की जा रही है।

सारणी 20: जापानी में "सु" से अंत होने वाली क्रियाएँ प्राय: सकर्मक होती हैं इन क्रियाओं का अकर्मक रूप बनाने के लिए इनके अंत के "सु" को "रु" में परिवर्तित कर दिया जाता है। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
帰す	काए+सु	मूल क्रिया के अंत के "सु" को "रु" में परिवर्तित करके	帰る	काए+रु
直す	नाओ+सु	मूल क्रिया के अंत के "सु" को "रु" में परिवर्तित करके	直る	नाओ+रु

5.2.1 जापानी में "आसु" से अंत होने वाली क्रियाएँ प्राय: सकर्मक होती हैं इनमें से कुछ क्रियाओं के अंत के "आसु" को "एरु" में परिवर्तित कर अकर्मक रूप बनाया जाता है। तो कुछ क्रियाओं में अंत के "आसु" को "उ" में परिवर्तित कर अकर्मक रूप बनाया जाता है।

सारणी 21: क) सकर्मक क्रियाओं के अंत के "आसु" को "एरु" में परिवर्तित कर बनाये गये अकर्मक रूप:

सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
ぬらす	नू+रासु	मूल क्रिया के अंत के "आसु" को "एरु" में परिवर्तित करके	ぬれる	नू+रेरु
増やす	फु+यासु	मूल क्रिया के अंत के "आसु" को "एरु" में परिवर्तित करके	増える	फु+येरु

सारणी 22: ख) सकर्मक क्रियाओं के अंत के "आसु" को "उ" में परिवर्तित कर बनाये गये अकर्मक रूप

सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
動かす	उगो+कासु	मूल क्रिया के अंत के "आसु" को "उ" में परिवर्तित करके	動く	उगो+कु
飛ばす	तो+बासु	मूल क्रिया के अंत के "आसु" को "उ" में परिवर्तित करके	飛ぶ	तो+बु

सारणी 23: जापानी में "ओसु" से अंत होने वाली क्रियाएँ प्राय: सकर्मक होती हैं इन क्रियाओं का अकर्मक रूप बनाने के लिए इनके अंत के "ओसु" को "इरु" में परिवर्तित कर दिया जाता है। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
起こす	ओ+कोसु	मूल क्रिया के अंत के "ओसु" को "इरु" में परिवर्तित करके	起きる	ओ+किरु
降ろす	ओ+रोसु	मूल क्रिया के अंत के "ओसु" को "इरु" में परिवर्तित करके	降りる	ओ+रिरु

सारणी 24: कुछ अन्य अनियमित परिवर्तनों के आधार पर भी सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ बनायी जा सकती हैं। इनके लिये अलग से कोई विशेष नियम नहीं हैं। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	जापानी सकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण	परिवर्तन	अकर्मक क्रिया	जापानी अकर्मक क्रिया का देवनागरी उच्चारण
聞く	कि+कु	अनियमित परिवर्तनों के आधार पर	聞こえる	कि+कोएरु
見る	मि+रु	अनियमित परिवर्तनों के आधार पर	見える	मि+एरु

सारणी 25: हिंदी की भाँति जापानी में भी कुछ क्रियाओं के अकर्मक तथा सकर्मक दोनों ही रुपों में समान प्रयोग देखने को मिलते हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया के रूप में प्रयोग	जापानी का देवनागरी उच्चारण	सकर्मक क्रिया के रूप में प्रयोग	जापानी का देवनागरी उच्चारण
ドアが閉じる。	दोआ गा तोजिरु।	ドアを閉じる。	दोआ ओ तोजिरु।
風が吹く。	काज़े गा फ़ुकु।	笛を吹く。	फ़ुए ओ फ़ुकु।

सारणी 26: जापानी में कुछ क्रियाएँ हमेशा अकर्मक ही रहती हैं, इनके सकर्मक रूप नहीं बनते हैं। उदाहरण:

अकर्मक क्रिया	सकर्मक रूप
いる	-
ある	-

सारणी 27: जापानी में कुछ क्रियाएँ हमेशा सकर्मक ही रहती हैं, इनके अकर्मक रूप नहीं बनते हैं। उदाहरण:

सकर्मक क्रिया	अकर्मक रूप
食べる	-
買う	-

उपरोक्त अकर्मक-सकर्मक की प्रक्रियाओं में से निम्नलिखित बातें सामने आती हैं:

क) कुछ अकर्मक क्रियाओं के अंत के "आरु" को "एरु" में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ख) कुछ अकर्मक क्रियाओं के अंत के "ेरु" को "सु" में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ग) कुछ अकर्मक क्रियाओं के अंत के "ेरु" को "रु" में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

घ) कुछ अकर्मक क्रियाओं के अंत के "आरेरु" को "उ" में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ङ) कुछ सकर्मक क्रियाओं के अंत के "सु" को "रु" में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

च) कुछ सकर्मक क्रियाओं के अंत के "आसु" को "एरु" अथवा "उ" में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

छ) कुछ सकर्मक क्रियाओं के अंत के "ओसु" को "इरु" में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ज) उपर्युक्त के अतिरिक्त कुछ क्रियाएँ अनियमित परिवर्तनों के आधार पर भी अकर्मक से सकर्मक तथा सकर्मक से अकर्मक रूप में व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

झ) कुछ क्रियाएँ ऐसी भी हैं जिनके अकर्मक एवं सकर्मक दोनों ही रुपों में समान प्रयोग देखने को मिलते हैं।

ञ) कुछ अकर्मक क्रियाएँ सदैव अकर्मक रूप में ही प्रयुक्त होती हैं, इनके सकर्मक रूप नहीं बनते तथा कुछ सकर्मक क्रियाएँ सदैव सकर्मक रूप में ही प्रयुक्त होती हैं, इनके अकर्मक रूप नहीं बनते हैं।

6. उपसंहार

उपर्युक्त प्रकार से देखें तो मालूम चलता है कि हिंदी एवं जापानी दोनों ही भाषाओं में क्रियाओं को कर्म के आधार पर अकर्मक एवं सकर्मक दो रूपों में वर्गीकृत किया गया है। हिंदी की सकर्मक क्रियाओं में कर्ता, कर्म एवं क्रिया तीनों उपस्थित होते हैं, जबकि जापानी में कर्ता का लोप किया जाना एक सामान्य बात है। हालाँकि, अदृश्य रूप से जापानी में भी कर्ता उपस्थित रहता ही है। हिंदी में जहाँ, अकर्मक क्रियाओं के साथ कारक चिह्नों का प्रयोग नहीं होता है, कारक चिह्न केवल सकर्मक क्रियाओं के साथ ही आते हैं। वहीं, जापानी में दोनों ही क्रियाओं (अकर्मक एवं सकर्मक) के साथ कारक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

रूपनिर्माण अथवा व्युत्पादन की दृष्टि से देखने पर स्पष्ट होता है कि दोनों ही भाषाओं (हिंदी एवं जापानी) में क्रिया के अकर्मक/सकर्मक रूप बनाने की पद्धति और नियमों में भिन्नता है। परंतु, दोनों ही भाषाओं में अकर्मक/सकर्मक प्रत्यय लगाने का स्थान समान है, अर्थात दोनों ही भाषाओं में अकर्मक/सकर्मक प्रत्यय मूल क्रिया के अंत में ही लगाये जाते हैं। इस आधार पर देखें, तो हिंदी में अकर्मक से सकर्मक रूप बनाने के लिए सामान्यत: ह्रस्व स्वर 'अ' को दीर्घ 'आ' में, 'इ' को 'ए' में, 'उ' अथवा 'ऊ' को 'ओ' में, प्रथम वर्ण के 'उ' अथवा 'ऊ' को 'ओ' तथा द्वितीय वर्ण 'ट' को 'ड़' में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं। इसी प्रकार से, सकर्मक से अकर्मक रूप बनाने के लिए सामान्यत: दीर्घ 'आ' स्वर को ह्रस्व 'अ' में, 'ए' को 'इ' में, 'ओ' को 'उ' में, प्रथम वर्ण के 'ओ' स्वर को 'उ' तथा द्वितीय वर्ण 'ड़' को 'ट' में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं। जबकि, जापानी में अकर्मक से सकर्मक रूप बनाने के लिए सामान्यत: अकर्मक क्रियाओं के अंत के "आरु" को "एरु" में, "ेरु" को "सु" अथवा "रु" में, "आरेरु" को "उ" में परिवर्तित करके अकर्मक से सकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं। तथैव, सकर्मक से अकर्मक रूप बनाने के लिए सामान्यत: सकर्मक क्रियाओं के अंत के "सु" को "रु" में, "आसु" को "एरु" अथवा "उ" में, "ओसु" को "इरु" में परिवर्तित करके सकर्मक से अकर्मक क्रियाएँ व्युत्पन्न की जा सकती हैं।

ध्यातव्य है, कि दोनों ही भाषाओं में कुछ क्रियाएँ अनियमित परिवर्तनों के आधार पर भी अकर्मक से सकर्मक एवं सकर्मक से अकर्मक रूप में व्युत्पन्न की जा सकती हैं। तथा दोनों ही भाषाओं में कुछ क्रियाएँ ऐसी भी हैं जिनके अकर्मक एवं सकर्मक दोनों ही रुपों में समान प्रयोग देखने को मिलते हैं। इसके अतिरिक्त, दोनों ही भाषाओं में कुछ अकर्मक क्रियाएँ सदैव अकर्मक रूप में ही प्रयुक्त होती हैं, इनके सकर्मक रूप नहीं बनते तथा कुछ सकर्मक क्रियाएँ सदैव सकर्मक रूप में ही प्रयुक्त होती हैं, इनके अकर्मक रूप नहीं बनते हैं। ज्ञात रहे, कि यहाँ पर प्रस्तुत हिंदी एवं जापानी की अकर्मक से सकर्मक एवं सकर्मक से अकर्मक रूप बनाने की पद्धतियाँ सार्वभौमिक नहीं हैं। इन पद्धतियों को हिंदी-जापानी की क्रिया-संरचना को समझने का एक उपाय मात्र ही समझना उपयुक्त होगा। इसमें अभी भी बहुत शोध कार्य आवश्यक है।

7. संदर्भ सूची

1. सिंह, सूरजभान. हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण. नई दिल्ली: साहित्य सहकार, 2000.
2. गुरु, कामताप्रसाद. हिंदी-व्याकरण. दिल्ली: प्रकाशन संस्थान, 2013.

3. बासुतकर, म.मा. हिंदी-मराठी क्रिया पदबंध. आगरा: केंद्रीय हिंदी संस्थान, 1985.
4. भूषण, भारत. हिंदी-पंजाबी क्रिया पदबंध. आगरा: केंद्रीय हिंदी संस्थान, 1984.
5. Tsujimura, Natsuko. An introduction to Japanese linguistics. Cambridge, MA: Blackwell Publishers; c1996.
6. Kuno, Susumu. The structure of the Japanese language. Cambridge, MA: MIT Press; c1973.
7. Martin, Samuel E. A reference grammar of Japanese. New Haven: Yale University Press; c1975.
8. Tsujimura, Natsuko. The handbook of Japanese linguistics. Malden, MA: Blackwell Publishers; c1999.
9. Singh, SurajBhan. A Syntactic Grammar of Hindi. New Delhi: Prabhatprakashan; c2017.
10. Jain, Usha R. Introduction to Hindi Grammar .Centers for South and Southeast Asia Studies, University of California; c1995.
11. Kachru, Yamuna. Aspects of Hindi grammar. The University of Michigan, Manohar; c1980.
12. Kiyose, Gisaburo N. Japanese Grammar: A New Approach. Kyoto: Kyoto University Press; c1995.
13. Makino, Seiichi & Tsutsui, Michio. A dictionary of intermediate Japanese grammar. Japan Times; c1995.
14. McClain, Yoko Matsuoka. Handbook of modern Japanese grammar. Tokyo: Hokuseido Press; c1981.